कविता - तुमको आगे बढ़ना होगा

अतीत कोसकर कुछ न होगा

खोया पाया सोचना होगा

गर्द पड़ी जो सत् यथार्थ पर

धीरे-धीरे धोना होगा।

इतिहास से सबक सीखकर

वर्तमान को गढ़ना होगा

तुमको आगे बढ़ना होगा।

लक्ष्य मार्ग में सदा मिलेंगे

पग-पग पर पग खींचने वाले

चुनौतियों से कब घबराए

सत्य के पथ पर चलने वाले।

अनुगमन का मार्ग बने जो

पथ पर पग यूं धरना होगा।

तुमको आगे बढ़ना होगा।

विचलित करती हैं शंकाएं

भटकी भटकी मनोदशाएं

झकझोर कर उन्हें जगाओ

सुप्त पड़ी जो जन शिराएं

राष्ट्र चेतना का स्वर भरकर

उनको झंकृत करना होगा।

तुमको आगे बढ़ना होगा।

शब्द क्रांति
अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका
www.shabdkrantipatrika.in

रोहित केसरवानी

हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड

मो. न.-7455932482